आचार विचार से होती बीमारी...

एक संत अपनी कुटिया के बाहर आसन पर बैठ श्रोताओं को उपदेश दे रहे थे कि ''घोर कलियुग का आगमन हो चुका है। अपने आपको सुरक्षित रखने के लिए कलियुग को स्वयं के अंदर प्रवेश होने नहीं देंगे तो स्वस्थ-तंदरूस्त रहेंगे।''

एक श्रोता ने पूछा, ''महाराज, आपकी बात तो सोने जैसी है, परन्तु विस्तार से समझाइये तो गले उतरेगी।''

संत ने कहा, ''आज सुबह मैं ज्ञान की पुस्तक पढ़ रहा था, जिसमें लिखा था कि श्रीकृष्ण ने पाण्डवों को कहा, अब कलयुग आने वाला है, इसलिए आपको तप करने जाना पड़ेगा। इसकी पुष्टि के लिए आप पाँचो भाई जंगल में जाकर आइए और वहाँ आपको जो कुछ दिखाई दे उसका वर्णन मेरे पास आकर कीजिए।

- ब्र. कु. गंगाधर

श्रीकृष्ण के कहने पर पांचों पाण्डव वन गये और वहां उन्होंने जो कुछ देखा उसका वर्णन आकर करने लगे।

श्रीकृष्ण के पूछने पर सर्वप्रथम युधिष्ठिर ने बताया कि ''मैंने जंगल में दो सूंढ़ वाला हाथी देखा।''

श्रीकृष्ण ने उसका रहस्य स्पष्ट करते हुए कहा कि '' दो सूंढ़ वाला हाथी अर्थात वे कलयुग के अधिकारी गण हैं। दो मुख का तात्पर्य है कि वे वादी और प्रतिवादी दोनों से रिश्वत लेंगे।

फिर भीम ने बताया कि ''मैंने एक गाय देखी जो अपनी बछड़ी का दूध पी रही थी।''

श्रीकृष्ण ने भीम द्वारा देखे गये दृश्य का स्पष्टीकरण करते हुए कहा कि ''जैसे गाय अपनी बछड़ी का दूध पी रही थी वैसे ही कलयुग के मनुष्य अपने बच्चे-बच्चियों के कमाये पैसों से ही अपना पेट पोषण करेंगे।''

फिर अर्जुन ने श्रीकृष्ण को बताया कि ''प्रभु! मैंने एक पंक्षी को देखा, जो मुख से धर्मयुक्त बातें बोल रहा था, लेकिन वह मुर्दे पर बैठा था।''

श्रीकृष्ण ने उसका अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा कि ''कलयुग में ज्ञानी व पंडितजन भी कुपात्र से दान लेने में कोई हिचकिचाहट महसूस नहीं करेंगे।''

इतने में नकुल ने अपने देखे हुए दृश्य का वर्णन करते हुए कहा कि ''मैंने तीन कुएं देखे, जिसमें बीच का कुँआ खाली था और आसपास के कुँए भरे हुए थे।''

श्रीकृष्ण ने उसका अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा कि ''कलयुग में लोग अपने सगे-सम्बंधियों के प्रति दुर्लक्ष्य रखेंगे, जबकि धनिक परिवारों के साथ सम्बन्ध बढ़ायेंगे।''

अंत में सहदेव की बारी आने पर उसने बताया कि ''मैंने एक पहाड़ पर से पत्थर गिरते देखा। वे बड़े वृक्षों को गिराते हुए नीचे की ओर आ रहा था लेकिन एक तिनके के सहारे अटक गया।''

श्रीकृष्ण ने उसका अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा कि ''जो पत्थर गिर रहा था वह धर्म था। वह संसार रूपी पहाड़ से खिसक कर तप, योग रूपी बड़े वृक्षों को तोड़ते हुए सत्य रूपी तिनके समान परमात्मा के नाम के सहारे ठहर गया।''

कलियुग के आगमन के इन लक्षणों को अनुभव करने पर पाण्डव वैराग्यशील बन गये और अपना राज-पाट छोड़कर तप करने पहाड़ों पर चले गये।

आज ज़माना बदल गया है। धर्म की ओर प्रेरित होने के बजाय लोगों में धन-सम्पत्ति और सत्ता की ओर लगाव पराकाष्ठा पर पहुंच गया है। सत्ताधारी पिता धृतराष्ट्र बन गये हैं और अपने वंशजों की योग्यता या अयोग्यता को देखे बिना उसे सत्ता अधिकारी बनाने लगे हैं। गांधी का यह देश, सब गांधी के नाम से चलता है, लेकिन गांधी समान आचरण कहीं भी नहीं है। मूल बात आज के मानव की है कि उसका तन के साथ मन भी बीमार है। उसपर कलियुग के वातावरण का गहरा प्रभाव पड़ चुका है। मन में कलयुग, वाणी

में कलयुग, कर्म में कलयुग, आचार व विचारों - शेष पेज 8 पर

व्यर्थ चिंतन, बोलचाल, व्यवहार व सम्बन्ध में अपना समय नहीं गंवाना

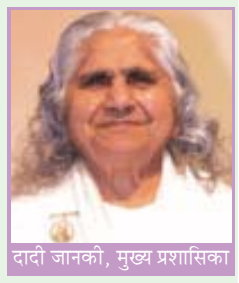
दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

बाबा, बाबा है, सारे विश्व का बाबा है पर हमको कहता है तुम मेरे समान बनो। क्या यह पॉसिबुल है? बाबा समान बनने के लिए क्या करना है? सारे कल्प में सतयुग से लेके कलियुग तक कोई ऐसा बाप नहीं होगा जो माता पिता, शिक्षक, सखा, सतगुरू एक ही हो, वो एक ही हमारा बाबा है क्योंकि माता की, पिता की, शिक्षक की भासना एक साथ दे देता है। पढ़ाई भी इतनी बड़ी, गुह्य है, जब बुद्धि मनन चिंतन में लग जाती है तो बाबा बहुत प्यारा लगता है, कार्य-व्यवहार में भी फीलिंग आती कि वही बाबा करा रहा है। हम चिंतन से फ्री हैं। जब मुझे कोई भाई बहन कहते हैं तुम निश्चिंत रहो, कोई चिंता नहीं करो। कहते हैं तो मैं निश्चिंत हूँ क्योंकि वो समझते हैं यह फिकर नहीं करे। बाबा के पास जन्म लेते ही बेफिकर बादशाह, बेगमपुर के बादशाह, त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, तीनों लोकों के मालिक हैं इसलिए कभी भी व्यर्थ चिंतन वा किसी फिकर में या बोल में या व्यवहार में, सम्बन्ध में समय नहीं गंवाया है। जैसे मेरा बाबा वन्डरफुल है, याद करते नहीं हैं पर याद आता है। कई बार दिन में हर कर्म करते, उठते-बैठते, सोते-जागते, खाते-पीते अच्छा है, बाबा का फोटो सामने है।

मैं शुक्रिया ड्रामा का मानती हूँ, यह साधन भी देखो कहाँ से कहाँ मिलन मनाने में बहुत अच्छे मदद करते हैं। आजकल यह साधन भी कहाँ से कहाँ सेवा में हाज़िरी भरने में मदद करते हैं। यहाँ बैठे भी जैसेकि सारे विश्व का चक्कर लगा रही हूँ, साइंस के साधनों द्वारा ऐसा लग रहा है। इसमें सिर्फ दो बातें हैं जहाँ मेरा तन होगा वहाँ मन है तो लाइट हैं। मन कहाँ और जगह, तन यहाँ तो यह बहुत गम्भीरता वाली बात है। यह इतनी बड़ी सभा में हरेक अपने आपको चेक करे, एक घण्टे के अन्दर मन कहाँ-कहाँ गया? यहाँ ही तन है तो मन भी यहीं है ना। यह नैचुरल हो। भले मैंने भक्तिमार्ग का अनुभव किया है, कभी भी मन शान्त नहीं हुआ। जिसके लिये बहुत बड़ी यात्रायें की मन को शान्त करने के लिये। कोई और खराब बातों में नहीं भटकता था, पर शान्त नहीं होता था। अभी आपको भी कभी कभी खुशी होती होगी जिस घड़ी खैंच होती है, तो मन एकदम शान्त हो जाता है। मन शान्त है तो बुद्धि संकल्प वो करेगी जो सेवा अर्थ होगा। यह बहुत अच्छा ज्ञान है।

ज्ञान है ही योग, योग का सबूत है धारणा। हमारा योग किसके साथ है, उसमें भी कंडीशन श्रीमत सिरमाथे पर है। मनमत, परमत के प्रभाव या झुकाव से फ्री हो गये। कदम कदम पर श्रीमत पर चलने की नैचुरल नेचर हो जाये। हरेक अगर ऐसा पुरुषार्थ करते हैं, तो ऐसे पुरुषार्थी के पुरुषार्थ से वहाँ का वातावरण और वायुमण्डल बहुत अच्छा रहता है। हम ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण हैं, तो हम ब्राह्मणों के बोलचाल में देवताई मिठास होनी चाहिए। समझो अभी ही हम देवता हैं, तो क्या बात करेंगे और कैसे बात करेंगे? कुछ व्यर्थ आयेगा ही नहीं ना। भगवान के बच्चे बनने के साथ-साथ भगवान को भी अपना बच्चा बनाने का अनुभव है? मुझे वर्सा देता है तो मैं बच्चा हूँ, पर मेरे पास क्या है जो मैं कहूँ बच्चा ये ले लो, कुछ नहीं, पर सम्बन्ध में उसको बच्चा बनाया तो सब कुछ उसका है। बहुत दिनों से लेकर एक बाबा से हर सम्बन्ध की भासना आती है। वही माता पिता, शिक्षक, सखा, सतगुरू है.. बाकी रहा बच्चा...। देखो, बाबा कैसे देख रहा है और हम कैसे देख रहे हैं। बाबा की दृष्टि महासुखकारी है।

विशेष विचित्र अनुभव द्वारा खुशी के खज़ाने से भरपूर

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

सभी सुनते हुए बड़े हर्षित लग रहे थे। सबकी सूरतें मुझे बहुत प्यारी लग रही थी। सभी ऐसे लग रहे थे, जैसे अतीन्द्रिय सुख में झूल रहे हों। मुख से कुछ कहना भी चाहते हों, लेकिन कह नहीं पा रहे थे। पूरा ही क्लास ऐसे लग रहा था मानो बहुत डीप में जा रहे हों। सुनते-सुनते योग में स्थित हो जाना ही डीप है। सभी यहाँ बैठे सुन रहे थे, लेकिन लग रहा था जैसे यहाँ पर नहीं हैं। कोई और ही मस्ती में मस्त थे। ऐसे लग रहा था जैसे बाबा बच्चों को कोई विशेष व विचित्र अनुभव करा रहे हैं। थोड़े समय बाद बोलना शुरू हुआ। लग रहा था, जैसे सभी बाबा के साथ वतन में हों। सबकी शक्लें प्राप्ति का अनुभव करा रही थी। लग रहा था जैसे कोई विशेष प्राप्ति हुई है, लेकिन क्या पाया ये तो हरेक को अपना-अपना अनुभव होगा। ऐसे अनुभव करना बहुत ज़रूरी है, हमें ऐसे अनुभवों में जाना चाहिए। वैसे तो सभी को अनुभव होते ही हैं, लेकिन किसी-किसी समय विशेष और विचित्र अनुभव होते हैं। ऐसे विशेष अनुभवों में रहो तो ऐसे लगेगा मानो खुशी का खज़ाना मिल गया हो। ये विशेष खज़ाने सदा संभाल के रखना जिससे लगे कि मुझे कुछ मिला है। क्या मिला है? ये तो हरेक अपने को जानता है। बाबा कहते हैं कि जो भी छोटी-छोटी गलतियाँ करते हो, उनको आज के दिन समाप्त कर दो। समझते भी हैं कि ये रांग है लेकिन रांग भी कर लेते हैं। अभी बाबा का कहना है कि सम्पन्न बन अपनी सम्पूर्णता का स्वरूप दिखाओ। अभी सम्पूर्ण हो गये तो जल्दी ही सब खत्म हो जायेगा और हम बाबा के पास जाकर मिल जायेंगे। आज हम बाबा से प्रॉमिस करते हैं कि बाबा हम सदा खुश रहेंगे। बाबा हम और आप मिलकर कुछ नया कर दिखायेंगे।

यहाँ बैठे सबके मन में क्या चल रहा है? मैं कौन, मेरा कौन? ये तो सदा याद रहता है कि मैं बाबा का हूँ। बाबा किसका है? मेरा बाबा है, बाबा को जब मेरा कहते हैं तो कितना प्यार आता है! मेरा से प्यार होता है। चाहे पूरा जाने या नहीं जाने लेकिन जब मेरा बाबा कहा तो बाबा से सम्बन्ध जुट जाता है। अंदर में प्रेम की शुद्ध लहरें आती हैं, उन लहरों में कितनी शक्ति भरी हुई होती है। कितना भी उनको भूलने की कोशिश करो लेकिन भूल नहीं सकते। बाबा मेरा है ना! जो मेरी चीज़ होती है, उससे ऑटोमेटिकली प्यार होता है। हम जब प्यार का शब्द मेरा बाबा कहते हैं, तो अंदर में कितनी खुशी होती है! खुशी का रेस्पॉण्ड आता है। बाबा शब्द कहते ही बाबा के प्यार में खो जाते हैं। सभी बाबा के प्यार में समाये हुए हैं? सबने बाबा के प्यार का अनुभव किया है? जैसे अनेक जन्मों के बिछड़े हुए जब आपस में मिलते हैं तो प्यार का कितना अनुभव होता है! आपको भी भगवान के प्यार के अनुभव स्वरूप का ऐसा अनुभव होता है? जब बाबा के प्यार में खो जाते हैं तो उसकी प्राप्ति कितनी होती है! बाबा हमें अपने प्यार में समा लेते हैं। बाबा की याद के सिवाए और किसी बात में मज़ा ही नहीं आता। हरेक का दिल कह रहा है मेरा बाबा। मेरा बाबा क्या है, अनुभव है ना? बाबा और बच्चों का ये प्यार बहुत अलौकिक है। आप सबने इस अलौकिक प्यार का अनुभव किया? जिसने बाप और बच्चों का प्यार क्या होता है, ये अनुभव कर लिया, वो जानता है कि ये प्यार कितना श्रेष्ठ है। हरेक की शक्लों से ये प्यार दिखाई दे रहा है। बाबा के प्यार में सबके चेहरे कितने आकर्षक लग रहे हैं! बाप और बच्चों का ये आध्यात्मिक प्यार दिल को बहुत आकर्षित करता है। सभी ने परमात्म प्यार का अनुभव किया है? इस प्यार में देह का कोई भान नहीं है, ये बहुत ही न्यारा और प्यारा है। जितना न्यारापन है उतना ही प्यारापन भी है। ये प्यार क्या है, आप जानते हो, एक सेकण्ड में ऑर्डर मिलता है अशरीरी बन जाओ। ये प्यार कितना विचित्र है! बाप और बच्चों के मिलन में कितनी राहत मिलती है! इस प्यार में मन को कितना सुख मिलता है! आप सबने ये अनुभव किया होगा। परमात्म प्यार बहुत अमूल्य है। आप सब यहाँ परमात्म प्यार का अनुभव करने के लक्ष्य से आये हैं? तो सभी अपने आपसे पूछो, हमने परमात्म प्रेम का अनुभव किया? ये कोई साधारण मनुष्य का प्यार नहीं है, इसमें बॉडी-कॉन्शियसनेस नहीं है। परमात्म प्यार शब्द देखो कितना कॉमन है, लेकिन अतीन्द्रिय सुख का कितना अनुभव कराता है।